



DEMO NOTES

चार महत्वपूर्ण विषयों (अशुद्धि संशोधन, उपसर्ग, प्रत्यय, और विलोम शब्द) पर आधारित एक संक्षिप्त नोट्स उपलब्ध है-

अशुद्धि संशोधन (वर्तनी, व्याकरण, वाक्य विन्यास)

भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने के लिए अशुद्धि संशोधन का ज्ञान होना अनिवार्य है। मुख्य रूप से अशुद्धियाँ तीन स्तरों पर होती हैं:

1. वर्तनी (Spelling) संबंधी अशुद्धियाँ

यह अशुद्धि शब्दों में वर्णों (मात्राओं या अक्षरों) के गलत प्रयोग के कारण होती है।

- **नियम व सुधार:** इ/ई, उ/ऊ की मात्राओं का ध्यान रखें, तथा पंचमाक्षर (अनुस्वार) और चंद्रबिंदु के अंतर को समझें।

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
उज्जवल	उज्ज्वल	कवियित्री	कवयित्री
अशीर्वाद	आशीर्वाद	शृंगार	शृंगार
पुजनीय	पूजनीय	प्रज्वलित	प्रज्वलित
अतिथि	अतिथि	अगामी	आगामी

2. व्याकरण (Grammar) संबंधी अशुद्धियाँ

यह अशुद्धियाँ संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक या क्रिया के गलत तालमेल (अन्वय) के कारण होती हैं।

- **लिंग संबंधी:** 'आत्मा', 'बुद्धि' स्त्रीलिंग हैं; 'दही', 'पानी' पुल्लिंग हैं।
 - अशुद्ध: दही खट्टी है। → शुद्ध: दही खट्टा है।
- **वचन संबंधी:** 'प्राण', 'आँसू', 'हस्ताक्षर', 'लोग' हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
 - अशुद्ध: मेरा प्राण निकल गया। → शुद्ध: मेरे प्राण निकल गए।
- **सर्वनाम संबंधी:** 'मेरे को', 'तेरे को' जैसे शब्द अशुद्ध हैं।
 - अशुद्ध: मेरे को घर जाना है। → शुद्ध: मुझे घर जाना है।

3. वाक्य विन्यास (Syntax) संबंधी अशुद्धियाँ

वाक्य में पदों (शब्दों) का क्रम सही न होने या अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से यह दोष आता है।

- **पदक्रम दोष:** विशेषण हमेशा विशेष्य से पहले आता है।
 - अशुद्ध: एक ठंडे पानी का गिलास लाओ। → शुद्ध: ठंडे पानी का एक गिलास लाओ।
- **पुनरुक्ति दोष (अनावश्यक शब्द):** एक ही अर्थ वाले दो शब्दों का साथ में प्रयोग वर्जित है।
 - अशुद्ध: वह वापस लौट आया। → शुद्ध: वह लौट आया। या वह वापस आ गया।
 - अशुद्ध: शायद आज वर्षा अवश्य होगी। → शुद्ध: शायद आज वर्षा होगी।

उपसर्ग (Prefix)

परिभाषा: वे सार्थक शब्दखंड या शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पहले (पूर्व में) जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन, विशेषता या विपरीतार्थक भाव उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

उपसर्ग + मूल शब्द = नया शब्द

उपसर्गों के प्रकार और प्रमुख उदाहरण

हिन्दी में मुख्य रूप से तीन प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है:

1. संस्कृत के उपसर्ग (तत्सम)

ये संख्या में मुख्यतः 22 होते हैं और तत्सम शब्दों के साथ जुड़ते हैं।

- अति (अधिक/पार): अति + अंत = अत्यंत, अति + आचार = अत्याचार
- अनु (पीछे/समान): अनु + रूप = अनुरूप, अनु + वाद = अनुवाद
- वि (विशेष/अभाव): वि + ज्ञान = विज्ञान, वि + देश = विदेश
- दुर / दुस् (बुरा/कठिन): दुर + भाग्य = दुर्भाग्य, दुस् + साहस = दुस्साहस

2. हिन्दी के उपसर्ग (तद्भव)

ये मूलतः संस्कृत से विकसित हुए हैं और तद्भव शब्दों के साथ लगते हैं।

- अ / अन् (अभाव/निषेध): अ + छूत = अछूत, अन् + पढ़ = अनपढ़
- अध (आधा): अध + पका = अधपका, अध + मरा = अधमरा
- कु / सु (बुरा/अच्छा): कु + पुत्र = कुपुत्र, सु + डौल = सुडौल
- बिन (बिना): बिन + ब्याहा = बिनब्याहा, बिन + देखा = बिनदेखा

3. आगत/विदेशी उपसर्ग (उर्दू, फ़ारसी, अंग्रेज़ी)

विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए उपसर्ग।

- कम (थोड़ा): कम + उम्र = कमउम्र, कम + अक्ल = कमअक्ल
- बद (बुरा): बद + नाम = बदनाम, बद + बू = बदबू
- ला (बिना/नहीं): ला + इलाज = लाइलाज, ला + परवाह = लापरवाह
- सब (अधीन/नीचे): सब + इंसपेक्टर = सब-इंसपेक्टर

विशेष नोट: परीक्षा में उपसर्ग अलग करते समय ध्यान रखें कि अलग किया गया 'मूल शब्द' हमेशा सार्थक होना चाहिए। जैसे: 'अन्याय' में अ + न्याय (न्याय का अर्थ है, अतः 'अ' उपसर्ग है)।

प्रत्यय (Suffix)

परिभाषा: वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत (पीछे) में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय का अपना स्वतंत्र अस्तित्व या अर्थ नहीं होता।

मूल शब्द + प्रत्यय = नया शब्द

प्रत्यय के मुख्य भेद

प्रत्यय के दो मुख्य भेद होते हैं: कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

1. कृत् प्रत्यय (सम्बन्ध: क्रिया/धातु)

जो प्रत्यय क्रिया के मूल रूप (धातु) के अंत में जुड़कर संज्ञा या विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। इनसे बने शब्दों को 'कृदंत' कहा जाता है।

- आई (लिख् + आई) → लिखाई (संज्ञा)
- अक (पाठ् + अक) → पाठक (संज्ञा)
- आऊ (बिक् + आऊ) → बिकाऊ (विशेषण)
- आहट (चिल्ला + आहट) → चिल्लाहट (भाववाचक संज्ञा)

2. तद्धित प्रत्यय (सम्बन्ध: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण)

जो प्रत्यय क्रिया के अतिरिक्त अन्य शब्दों जैसे संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। इनसे बने शब्दों को 'तद्धितांत' कहते हैं।

- ता (मानव [संज्ञा] + ता) → मानवता
- इया (चूहा [संज्ञा] + इया) → चुहिया
- एरा (चाचा [संज्ञा] + एरा) → चचेरा
- त्व (अपना [सर्वनाम] + त्व) → अपनापन / अपनत्व

महत्वपूर्ण नियम (आदि-वृद्धि नियम)

कुछ प्रत्यय (जैसे: इक, य, अ, आयन) जब शब्द में जुड़ते हैं, तो शब्द के पहले स्वर में परिवर्तन कर देते हैं:

- 'अ' या 'आ' बदलकर 'आ' हो जाता है: समाज + इक = सामाजिक(स → सा)
- 'इ/ई/ए' बदलकर 'ऐ' हो जाते हैं: इतिहास + इक = ऐतिहासिक(इ → ऐ)
- 'उ/ऊ/ओ' बदलकर 'औ' हो जाते हैं: उद्योग + इक = औद्योगिक(उ → औ)

विलोम शब्द (Antonyms)

परिभाषा: एक-दूसरे का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

विलोम शब्द निर्माण के सुनहरे नियम

विलोम शब्द हमेशा समान व्याकरणिक कोटि के होने चाहिए। अर्थात:

1. संज्ञा का विलोम संज्ञा ही होगा (जैसे: राजा का प्रजा/रंक)।
2. विशेषण का विलोम विशेषण ही होगा (जैसे: काला का सफेद)।
3. तत्सम शब्द का विलोम तत्सम और तद्भव का तद्भव होगा (जैसे: सूर्य का चंद्र, सूरज का चाँद)।

BHASHA DRISHTI
ACADEMY

उपसर्गों के प्रयोग से बनने वाले प्रमुख विलोम शब्द

कई बार परीक्षा में उपसर्ग बदलकर या लगाकर विलोम बनाए जाते हैं:

- 'अ' उपसर्ग जोड़कर: सभ्य – असभ्य, न्याय – अन्याय
- 'अप' उपसर्ग जोड़कर: यश – अपयश, कीर्ति – अपकीर्ति
- 'अन्' उपसर्ग जोड़कर: आदर – अनादर, उचित – अनुचित
- 'वि' उपसर्ग जोड़कर: सम्मुख – विमुख, देश – विदेश

महत्वपूर्ण विलोम शब्द सूची

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अनुराग	विराग	अन्तरंग	बहिरंग
अज्ञ	विज्ञ	आविर्भाव	तिरोभाव
उत्कर्ष	अपकर्ष	उपेक्षा	अपेक्षा
कृत्रिम	प्राकृतिक / नैसर्गिक	कृतज्ञ	कृतघ्न
जंगम	स्थावर	तामसिक	सात्त्विक
निंदा	स्तुति	परमार्थ	स्वार्थ
मुख्य	गौण	विस्तार	संक्षेप
व्यष्टि	समष्टि	शोषक	पोषक
सगुण	निर्गुण	सदाचार	दुराचार
ह्रास	विकास / वृद्धि	क्षणिक	शाश्वत